

---

# Gurugangashtakam

---

## गुरुगङ्गाष्टकम्

---

### Document Information



---

Text title : Gurugangashtakam

File name : gurugangAShTakam.itx

Category : devii, devI, nadI, aShTaka

Location : doc\_devii

Transliterated by : Anil Kumar Pandey anil.kumar17pandey at gmail.com

Proofread by : Anil Kumar Pandey anil.kumar17pandey at gmail.com

Description/comments : Ganga Jnana Mahodadhi compiled by Acharya Ramapada Chakravarty

Latest update : December 7, 2019

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 7, 2019

*sanskritdocuments.org*

---



गुरुगङ्गाष्टकम्



श्रीगणेशाय नमः ।

मातर्नन्दिकतीर्थसुन्दरभवे शैवैरुपास्ये शिवे

निःशेषाघनिवारिणि त्वमुदिरे सौन्दर्यरत्नाकरे ।

देवानीकसुसेविते सुखकरे संसारतापापहे

दीनं सुज्ञजनालिसेवितपदे त्वं मां पवित्रं कुरु ॥ १ ॥

रोगार्दितं संसृतितापतप्तं षड्गर्महीनं त्वघसम्भृतं माम् ।

न चापगान्या भुवने त्वदन्या नाघं प्रकर्तुं जननी च तां गतम् ॥ २ ॥

जगज्जननि त्वद्यशो भुवि महत्समुद्यत्सदा

जनावलि-पवित्रतां प्रकुरुतेऽत्र बिन्दुस्तव ।

इति श्रवणतो मतिर्मम तवाम्बुसंसेवने

पवित्रमकरोषि चेज्जननि तां कथं ते सुते ॥ ३ ॥

त्वदम्बुसेवनात्सदा निराकुला भविन्त ते

खगा मृगाः सुरर्षयो नरोत्तमाः सुरासुराः ।

सुभक्तियुक्तचेतसा नरस्त्वदम्बुसेवनं

करोति यः स याति धाम वैष्णवं सुरार्थितम् ॥ ४ ॥

असवो यदि यान्ति त्वत्तटे स नरो धन्यतया दिवं प्रयाति ।

हरिनाम इवात्र त्वत्तटं न विमुञ्चन्ति कदापि मानवाः ॥ ५ ॥

तव तीरनिवासवर्जिता न जनिर्जगतीतले मता सा ।

न यथा हरिनामवर्जिता रसनाया विषवल्लरी मता सा ॥ ६ ॥

विरजागुरुगङ्गे मे सितासिते यत्र सङ्गते तत्र ।

यः प्लावयति शरीरं स याति भक्त्या सुमाणिकं धाम ॥ ७ ॥

त्वद्दर्शनात्त्वत्स्मरणान्त्वाम्बुसंसेवनान्माणिकपादसम्भवे ।

यत्सौकृतं तत्कथने न शक्त्या ब्रह्मादयस्तत्र कियानहं नरः ॥ ८ ॥

गुरुगङ्गाष्टकमिदं पठतां सर्वसिद्धिदम् ।  
पठितव्यं सर्वकाले शयने च विशेषतः ॥ ९ ॥  
इति गुरुगङ्गाष्टकं सम्पूर्णम् ।

Encoded and proofread by Anil Kumar Pandey anil.kumar17pandey at  
gmail.com

---



*Gurugangashtakam*

pdf was typeset on December 7, 2019



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

